आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 338 | ARYA SABHA MAURITIUS | *11th Aug. to 25th Aug. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

तैंतीस देवता ईश्वर में ही समाहित

ओ३म् यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अंङ्गे सर्वे समाहिताः।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

TRENTE-TROIS DEVĀS / DEVATĀS EXISTENT EN DIEU

Om ! Yasya trayastrinshad devā ange sarve samāhitāh.
Skambham tam bruhi katamah svideva sah.

Atharva Veda 10/7/13

(suite du dernier numéro)

Interprétation / Anushilan

Ce verset de l'Atharva Veda fait état de trente-trois *devās* ou *devatās* qui doivent leur existence à Dieu, L'Être Suprême. Tous ces trente-trois devās existent en Lui et ils sont pénétrés de tous côtés par Lui.

De par leur ignorance et / ou absence de vraies connaissances, des gens malavisés, (sans discernement) croient dans l'existence de 330 millions de *devās* ou *devatās* et ils les prennent pour Dieu, L'Être Suprême.

Cette mauvaise interprétation, qui prête à beaucoup de confusion, est élucidée par les Védas. On y trouve des versets qui établissent (prouvent) qu'il n'y a pas plusieurs dieux, mais un seul Dieu. C'est Lui seul qui est digne d'adoration. Tandis que les *devās* / *devatās* ne doivent pas être adorés, mais ils doivent être admirés et appréciés par rapport à leurs qualités splendides et de leurs apports considérables pour le bien-être de l'humanité et de toutes les créatures du monde.

Les *devās* / *devatās* sont les corps célestes lumineux, les pouvoirs cosmiques et autres éléments de la nature tels que le feu, l'air, l'eau, la lune, la terre, le firmament, l'électricité, l'espace …etc. Ils sont tous inertes (sans vie) à l'exception de l'être humain et autre créatures.

Seul Dieu, L'Être Glorieux et Suprême a une emprise totale sur les trente-trois *devās* / *devatās* et les gère. Sans son support, le bon fonctionnement de l'univers ou le cosmos sera grandement brouillé. Il y aura le chaos et l'univers s'écroulera.

Conséquemment, nous devons, *à priori*, exprimer notre profonde reconnaissance et notre gratitude envers un seul Dieu (L'Être Suprême) (devon ké deva Mahādeva) en lui rendant gloire par notre adoration la plus sincère.

Les trente-trois *devās* / *devatās* sont : 8 *vasus* + 11 *rudras* + 12 *ādityas* + 1 *Indra* + 1 *Yaj* ou *prajāpati*.

Les 8 *vasus* constituent l'habitat de toutes les créatures de l'univers. Ce sont le feu, la terre, l'air, le ciel, le soleil, le firmament, la lune et les constellations.

Les 11 *rudras* sont les 10 *prānas* + l'âme (*ātmā*). '*Rudra*' est un nom attribué à Dieu car la punition infligée aux méchants les fait souffrir ou pleurer. Ces 11 *devās* / *devatās* font pleurer toute la famille et les amis quand ils quittent le corps (à la mort).

Les 10 *prānas* sont les forces vitales du corps subtil (*sukshma sharireera*) durant toute les différentes vies, sauf dans la phase de *pralaya* (la dissolution de l'univers) et durant le *moksha* (le salut / la libération du cycle de la naissance et de la mort).

Les 10 *prānas* résident dans les différentes parties du corps. Ils sont toujours en interaction avec les éléments de la nature tels que le soleil, la terre, l'espace/ le ciel, l'eau …etc., et ils font fonctionner les différentes parties du corps humain efficacement durant toute sa vie.

cont. on pg 3

साक्षात्कार

नोट – 'आर्यसमाज और हिन्दी' पर अपना लघु शोध-प्रबन्ध लिखने के लिए बी०ए० के एक शोध-छात्र ने डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी से साक्षात्कार के दौरान कई प्रश्न किये, जिनमें कुछ प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं –

प्रश्न – डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी, आप दीर्घकाल से आर्यसमाज और हिन्दी से जुड़े हुए हैं। कृपया मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना और उसके द्वारा हिन्दी को प्रोत्साहित करने की आरम्भिक भूमिका के बारे में कुछ बताने का कष्ट कीजिए ।

उत्तर – आर्यसमाज अपने स्थापना-काल से अबतक हिन्दी पढ़ाई पर बल देता आया है। यहाँ यह बताना समीचीन होगा कि सन् १९३४ से १९१५ तक भारतीय रोटी-रोज़ी की खोज में शर्तबन्द श्रमिक के रूप में मॉरीशस आते रहे। चूँकि अधिकांश जनों की भाषा भोजपुरी थी, अतः यही भाषा भारतीय मूल के लोगों की बोलचाल की भाषा बन गई। कुछेक पढ़े-लिखे श्रमिक रात्रि-काल में फूस के बने 'बैठका' में रामचरितमानस का गान करते थे और सत्संग में भाग लेने वालों को भोजपुरी में ही दोहे-चौपाइयों को समझाया करते थे। बीसवीं सदी के प्रथम दशक में महर्षि दयानन्दकृत 'सत्यार्थप्रकाश' ने इस देश में आर्यसमाज की स्थापना की। बात सन् १९०२ की है। बंगाल से आई हुई एक टुकड़ी भारत लौट रही थी। उस सेना में भोलानाथ तिवारी नाम का एक हवलदार था, जिसके पास 'सत्यार्थप्रकाश' की एक प्रति थी। उसने वह पुस्तक अपने ग्वाले, भिखारी-सिंह को दे दी। चूँकि भिखारीसिंह वह पुस्तक पढ़ने में असमर्थ थे, अतः उन्होंने खेमलाल लाला नामक व्यक्ति को पुस्तक दे दी। खेमलाल जी पुस्तक पढ़कर बड़े ही प्रभावित हुए। उन्होंने अपने दो अन्य मित्रों को वह पुस्तक बताई। फलतः 'सत्यार्थप्रकाश' पर सत्संग होने लगा। इसी ग्रन्थ के पठन-पाठन से यहाँ खड़ी बोली हिन्दी का प्रचार हुआ। खड़ी बोली हिन्दी आर्य समाजियों की भाषा बन गई ।

प्रश्न – मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना में मणिलाल डाक्टर का क्या योगदान था ?

उत्तर – सन् १९०१ के अक्तूबर मास में युवा बारिस्टर मोहनदास कर्मचन्द गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय कुछ दिनों के लिए मॉरीशस में रुक गए थे। उन्होंने यहाँ के गोरे पूंजीपतियों को अनपढ़ भारतीय श्रमिकों के प्रति घोर अन्याय करते पाया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

ईश्वर भक्ति का प्रताप

ईश्वर-भक्ति में अपार शक्ति होती है। आस्था पूर्वक प्रभु का ध्यान करने से मन में भक्ति-भाव उत्पन्न होता है। हमारे सोच-विचार, स्वभाव और व्यवहार आदि पवित्र हो जाते हैं। हमारी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति प्रबल हो जाती है। हमारे जीवन में आशा, उत्साह, नई उमंग एवं नव स्फूर्ति का संचार होने लगता है। सत्य-ज्ञान की ज्योति चमकने लगती है और अज्ञान के सारे अन्धकार मिटने लगते हैं, इसीलिए प्रभु-भक्ति की महिमा अनन्त बतलाई गई है।

मानव जाति को ज्ञान हासिल करने तथा ईश्वर भक्ति में लीन होने का वरदान प्राप्त हुआ है जो विश्व के अन्य जीवों को प्राप्त नहीं। हम सत्य-विद्याओं की खोज में और परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना में जितनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करेंगे, उतनी ही हमारी बाहरी और आंतरिक वृद्धि होती जाएगी। सच्चे ज्ञान, अटल वैराग्य और सत्य कर्मों के बल पर हम मानव कर्म निभाने में सफल होते हैं ।

मानवात्मा को परमात्मा तक पहुँचाने का सुगम मार्ग ईश्वर की सच्ची भक्ति है। अपने शरीर के सर्वांगीण उत्थान करने का सर्वोत्तम साधन है। भौतिक भोगों को भोगते हुए हम अगर यज्ञ-महायज्ञों, वेद-पाठों, सत्संगों, धर्मोपदेशों में अपनी श्रद्धा दिखाते रहेंगे और धार्मिक ग्रन्थों के स्वध्याय में लगे रहेंगे, तो हमें भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द अवश्य प्राप्त होगा।

आज हम भौतिक उपभोगता बनकर व्याकुल हैं - इसी कारण हमारे जीवन में अशांति, असंतोष और शारीरिक एवं मानसिक रोग बढ़ रहे हैं, हम भौतिकवादी बनकर अध्यात्म जगत् में प्रवेश नहीं कर पाते हैं, प्रभु भक्ति से हमारी आस्था घटती नज़र आ रही है। ऐसी तनावपूर्ण परिस्थिति में हम सभी को वेद की सत्य विद्याएँ ग्रहण करके भौतिक और आध्यात्मिक सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करने की अति आवश्यकता है।

आर्यसमाज द्वारा आयोजित हमारे सभी धार्मिक पर्व हमें ईश्वर-भक्ति, पूजा-पाठ, वेदाध्ययन एवं धार्मिक कृत्य करने का शुभ अवसर प्रदान करते हैं। ये सारे पर्व हमें सांसारिक मोह-माया के बन्धनों से हटाकर शास्वत सुख शान्ति तथा अपार आनन्द देते हैं। हमारे समस्त पर्वों में श्रावणी उपाकर्म महोत्सव हमें आध्यात्मिक जगत् में पदार्पण करने के लिए उत्साहित और प्रभावित करते हैं। अतः हमें बड़ी लगन के साथ इस महान् पर्व का भव्य आयोजन करना चाहिए।

समस्त आर्य परिवारों से आग्रह है कि आप बड़ी आस्था पूर्वक इस महोत्सव में भाग लें। सभी सामाजिक संस्थापकों से निवेदन है कि आप सुयोजित ढंग से प्रभावशाली गतिविधियों का प्रबन्ध करें। हमारे पुरोहित-पुरोहिताओं एवं विद्वानों से यही माँग करते हैं कि आप श्रावणी महोत्सव की श्रेष्ठता बढ़ाने का प्रबन्ध करें। हम सभी लोग अगर आर्य-पर्व-पद्धति अनुकूल यज्ञ-महायज्ञों का भव्य आयोजन करके धार्मिक वातावरण स्थापित करेंगे तो हम अवश्य ही प्रभु भक्ति में लीन होकर अपने अंतःकरण को शुद्ध करने में सफल होंगे और भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त करेंगे।

आर्यसभा एवं वेद प्रचार समिति की यही कामना है कि सभी आर्य बन्धुओं के गृह पर यज्ञ-महायज्ञों तथा धर्मोपदेशों का आयोजन अवश्य हो। सभी शाखा समाजों की ओर से प्रभावशाली धार्मिक कृत्यों की तैयारी हों। हमें पूर्णाशा है कि गत सालों से अधिक इस साल श्रावणी महोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हों, जिन गतिविधियों से प्रभावित होकर देश के सभी नागरिक हर्षित हो।

वेद-विद्या देश में फैलाती रहे ।
प्रभु की भक्ति मन में जागती रहे ।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

मॉरीशस में बसे भारतवंशियों का कोई रक्षक न था। सन् १९०७ में गांधी जी ने बारिस्टर मणिलाल मगनलाल को हिन्दुओं की रक्षा के लिए मॉरीशस भेजा। बारिस्टर मणिलाल ने खेमलाल लाला, गुरुप्रसाद दलजीतलाल, गयासिंह आदि व्यक्तियों के सहयोग से मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में ८ मई १९११ में आर्यसमाज की स्थापना की और हिन्दी में धुआँधार भाषण देकर नवजागरण उत्पन्न किया। सन् १९११ में भारत लौटने पर उन्होंने एक प्रकाण्ड विद्वान्, डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज को सपरिवार मॉरीशस भेजा।

प्रश्न – डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में क्या किया ?

उत्तर – डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज दिवसकाल में मरीज़ों की चिकित्सा करते थे और रात्रि तथा सप्ताहान्त में घूम-घूम कर हिन्दी में भाषण करते थे। उनकी पत्नी, सुमंगली देवी लड़कियों की पढ़ाई के लिए कन्या पाठशालाओं की स्थापना करती थीं। इस तरह पति-पत्नी दोनों ने आर्यसमाज के आरम्भिक वर्षों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने मॉरीशस के गाँव-गाँव और शहर-शहर में बीसियों हिन्दी पाठशालाएँ खोल दीं।

प्रश्न – आर्यसमाज के आरम्भिक दशकों में किन-किन आर्यसमाजी विद्वानों ने हिन्दी का प्रचार किया ?

उत्तर – आर्यसमाज के आरम्भिक चार दशकों में भारत से दर्जनों आर्यसमाजी विद्वान् मॉरीशस आये और लम्बे समय तक यहाँ रहकर वैदिक धर्म के साथ ही हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते रहे। उन विद्वानों से प्रभावित होकर कई युवक उच्च पढ़ाई के लिए भारत गए और डी०ए०वी० कॉलिजों में अध्ययन करके हिन्दी के योग्य विद्वान् बनकर स्वदेश लौटे। उन विद्वानों में पंडित काशीनाथ किष्टो, पंडित वेणीमाधव सतीराम, पं० लक्ष्मणदत्त शास्त्री, पंडित वासुदेव विष्णुदयाल, पंडित कृष्ण विशारद, पंडित सुखदेव रामप्यार, आदि के नाम गर्व से स्मरण किये जाते हैं। इन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अथक प्रयास किया। पंडित काशीनाथ किष्टो ने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने के लिए 'शिशुबोध' नामक पाठ्य पुस्तकें भी लिखीं । वे और पंडित बेणीमाधव सतीराम ने 'आर्य परोपकारिणी' और 'आर्य प्रतिनिधि सभा' के मुखपत्र – 'मॉरीशस आर्य पत्रिका', 'आर्यवीर', 'जागृति' आदि पत्रों का सम्पादन किया ।

प्रश्न – आर्यसमाज की स्थापना हुए सौ वर्ष बीत गए। एक सदी के अन्तर्गत आर्यसमाज ने हिन्दी-प्रचार में क्या किया?

उत्तर – पिछली एक सदी से आर्यसमाज अपनी कार्यकारिणी समिति में मात्र हिन्दी का प्रयोग करता आया है। सभी कार्यवृत्तान्त हिन्दी में लिखे जाते हैं । आर्यसमाज की सभी शाखाओं का केन्द्र 'आर्यसभा' है, जो हिन्दी की कई परीक्षाओं का संचालन करके छात्र-छात्राओं को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पढ़ाई के लिए प्रेरित करती रही है। हिन्दी पाठशालाओं के वार्षिकोत्सवों का आयोजन करके हिन्दी के वातावरण का निर्माण करती रही है। मॉरीशस में आर्यसमाज ही मात्र एक ऐसी संस्था है, जो १९१२ से आज तक अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करती आई है। इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा का खूब प्रचार किया गया । आर्यसमाजी विद्वानों ने अपनी लेखनी के माध्यम से विपुल मात्रा में हिन्दी साहित्य का वर्धन किया है। मॉरीशस में हिन्दी भाषा का कोई भी इतिहास आर्यसमाज के हिन्दी-प्रचार का उल्लेख किये बिना लिखा नहीं जा सकता।

प्रश्न – पिछले दो दशकों में आर्यसभा ने हिन्दी के लिए क्या किया है ?

उत्तर – गत दो दशकों में 'आर्य सभा मॉरीशस' ने इस देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में प्रशंसनीय कार्य किये हैं। इस सभा द्वारा संचालित दो सौ सायंकालीन और रविवारीय हिन्दी पाठशालाओं में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिन्दी का शिक्षण-परीक्षण-कार्य नियमित रूप से होता रहा है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आर्यसभा की 'विद्या समिति' द्वारा नियुक्त निरीक्षक अध्यापक-अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यशालाएँ करते रहे हैं। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गईं। छठी पास विद्यार्थियों के लिए 'सिद्धान्त प्रवेश' परीक्षा का सूत्रपात किया गया। इस कक्षा में भाषा पढ़ाने के लिए 'साहित्य प्रवेश' और धार्मिक शिक्षा देने के लिए 'हमारे महापुरुष' नाम से पुस्तकें तैयार की गईं। आर्य सभा ने अपने डी०ए०वी० कॉलिजों में हिन्दी की माध्यमिक पढ़ाई, सभा द्वारा स्थापित 'आर्ष गुरुकुल' में 'सिद्धान्त भास्कर', 'सिद्धान्त शास्त्री', 'सिद्धान्त वाचस्पति' और 'ऋषि दयानन्द संस्थान' में बी०ए०,एम०ए०, 'धर्म भूषण', 'धर्म रत्न', 'शास्त्री' आदि परीक्षाओं के लिए हिन्दी भाषा और हिन्दी के माध्यम से धार्मिक शिक्षण किया है। आर्य सभा के पंडित-पंडिताओं ने हिन्दी के ही माध्यम से सत्संग, भाषण, प्रवचन एवं स्थानीय रेडियो-टेलीविजन पर न केवल 'वैदिक वाणी' कार्यक्रम के माध्यम से, अपितु अनेक उत्सवों के अवसरों पर वक्तव्यों के द्वारा घर-घर हिन्दी पहुँचाई है। गत बीस वर्षों में 'आर्योदय' पत्र के इतने विशेषांक प्रकाशित किये हैं, कि यदि सब संगृहीत किये जायें तो अनेक ग्रन्थ बन जायेंगे। इस तरह पिछले दो दशकों में आर्यसमाजी विद्वानों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बड़े ही प्रशंसनीय कार्य किए हैं।

डॉ० उदय नारायण गंगू

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के निबंधों में दार्शनिक निरूपण

लेखिका : श्रीमती शशि बाला दुखन

दर्शन हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। हमारे जीवन का दर्शन से गहरा सम्बन्ध है। हम कौन हैं, किसने हमें इस संसार में भेजा है, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमें यहाँ से कहाँ जाना है, इन सब प्रश्नों के उत्तर हमें दर्शन ग्रन्थों में ढूँढने पड़ते हैं।

'दर्शन' का अर्थ है – जिसके द्वारा देखा जाए। प्रश्न उठता है कि क्या देखा जाए? उत्तर है वस्तु का तात्विक स्वरूप। इस जगत् का सच्चा स्वरूप क्या है? यह जड़ है या चेतन? इस संसार में हमारा कर्तव्य क्या है? जीवन को श्रेष्ठ, सुन्दर और सुखी बनाने के साधन क्या हैं? हम कौन हैं? परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है? इन और इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देना दर्शन का कार्य है।

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती इस विषय पर अपनी पुस्तक 'षड्दर्शनम्' *(पृ०१)*में लिखते हैं – "पाश्चात्य विचारधारावाले दर्शन के लिए 'फ़िलॉसोफ़ी' (philosophy) शब्द का प्रयोग करते हैं। 'फ़िलॉसोफ़ी' दो ग्रीक शब्दों के मेल से बना है – फ़िलॉस + सोफ़िया । 'फ़िलॉस' का अर्थ है प्रेम, अनुराग और 'सोफ़िया' का अर्थ है विद्या। इस प्रकार इस शब्द का अर्थ हुआ विद्या से प्रेम = विद्यानुराग। आरम्भ में फ़िलॉसोफ़ी में विज्ञान का भी समावेश था, परन्तु आजकल पाश्चात्य देशों में दर्शन और विज्ञान का पार्थक्य स्पष्ट कर दिया गया है।'

भारतीय दर्शन में ईश्वर, जीव, प्रकृति, ज्ञान, भाग्य, पुनर्जन्म, बन्धन, मोक्ष आदि विषयों का विशद वर्णन किया गया है। मॉरीशस के बहुत से हिन्दी निबंधकारों ने उपर्युक्त विषयों पर प्रकाश डाला है। इस देश के हिन्दू निर्गुण और सगुण ब्रह्म, दोनों में विश्वास करते हैं। आर्यसमाज के अनुयायी विशेष रूप से निर्गुण ब्रह्म की ही उपासना करते हैं। सनातनी हिन्दू निर्गुण-सगुण, दोनों के उपासक हैं। इन दोनों उपासना-पद्धतियों की झाँकी कई निबंधों में प्राप्त होती है।

ब्रह्म

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल ब्रह्म के विराट् रूप का निर्देश करते हुए लिखते हैं – "हमें क्या मालूम था कि जिस बुद्धि पर गर्व करके उससे काम लेने लगेंगे तो हम इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि ईश्वर है नहीं? सूर्य और चन्द्रमा को स्थूल नेत्रों से देख सकने के कारण उन्हें ज्योति देनेवाले मानते हैं। वे तो तेरे अन्दर हैं, हे स्वामिन्! समा जानेवाले हैं। वे छोटे हैं और तू बड़ा है। छोटे के अस्तित्व से परिचित होकर बड़े का होना हम अस्वीकार करते रहे । हमारी बुद्धि चकरा रही थी। सूर्य-चंद्रादि तो पेड़ की डालें हैं। चन्द्रमा की ज्योत्स्ना और सूर्य का प्रकाश भौतिक प्रकाश है। इससे आध्यात्मिक प्रकाश की एक झलक-मात्र मिलती है। डाली को देखकर हमें जानना चाहिए था कि पेड़ है। परमात्मा तो केन्द्र है, खंबा है, नाभि है। मनुष्य तब मनुष्य बनता है, जब उसे यह बोध होता है कि परमात्मा बीच में है और हम सब उस एक केन्द्र की ओर दौड़ रहे हैं। मनुष्य परमात्मा को अपना पिता कहें तो वे एक-दूसरे के भाई हो जाएँगे, उनमें मैत्री आयेगी ।' *('वेद भगवान् बोले', पृ० ९३)*

उपर्युक्त निबंध के माध्यम से पंडित वासुदेव विष्णुदयाल ने पाठकों को ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का बोध कराया है। ईश्वर को पिता के रूप में चित्रित कर, मनुष्य को उसके पुत्र बताया है। यदि सभी जन ईश्वर को अपने पिता और एक-दूसरे को अपने भाई-बहन मान ले, तो शत्रुता समाप्त हो जाएगी और चहुँ ओर भाईचारे का वातावरण व्याप्त हो जाएगा। यह संसार स्वर्ग बन जाएगा।

आत्मा

भारतीय दर्शन की खोज का दूसरा विषय रहा है 'आत्मा'। उपनिषदों *(बृहदारण्यक, २/४/५)* ने घोषणापूर्वक कहा – **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः** । अर्थात् अरे ! वह आत्मा ही जानने-योग्य, दर्शन करने योग्य है।

परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है और जीवात्मा मात्र सत्-चित्त है। सभी आस्तिक दर्शनकार जीवात्मा को नित्य, अल्पज्ञ, ज्ञानादि गुणों से युक्त एक देशी तथा कर्मफलभोक्ता मानते हैं। जीव और ब्रह्म एक नहीं हैं।

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी की अधिकांश रचनाओं में भारतीय दर्शनों की व्याख्या बड़े ही सुन्दर रूप में हुई है। वे अपने निबंध, 'मनुष्य आत्मा है' में लिखते हैं – "इस तथ्य का ज्ञान कि हम आत्मा हैं, हमको आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आत्मा अकेला रहना उचित नहीं समझता। वह परम सखा परमात्मा की खोज में निकाल पड़ता है और उसे वांछित आनन्द प्राप्त हो जाता है।" *(विष्णुदयाल निबंधावली, पृ० १४६)*

वेदान्त में आत्मा को परमात्मा का अंश कहा गया है। आत्मा जड़ नहीं है, अतः वह परमात्मा से अधिक मिलता-जुलता है। आत्मा सब प्राणियों में, पशु-पक्षी में भी होता है। वे सब प्राणियों को धारण करते हैं। उन्हीं से पेड़ और पौधों को, जिनमें पत्ते, फल आदि लगते हैं, शक्ति मिलती है। जीवित-जाग्रत जगत् को धारण करके ईश्वर अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करता है। संसार में रस है तो कारण यह है कि रस देने वाले परमात्मा से उसे शक्ति प्राप्त होती है।

अपने एक अन्य निबंध – 'संसार वृक्ष' में पंडित वासुदेव जी 'आत्मा' के बारे में लिखते हैं – "सांख्य यही ज्ञान देता है कि आत्मा पति के समान है और देह पत्नी के समान। जब इन दोनों का मेल हो जाता है, एक आदर्श विवाह होता है, आत्मा देह से समय-समय पर कहता है कि देख, मैं परमात्मा की ओर जाने के लिए आतुर रहता हूँ, मेरा नाम परमात्मा के नाम से मिलता-जुलता है, मैं परमात्मा की तरह अक्षर हूँ, तुझ क्षर को मेरे साथ रहकर अक्षर के गुणों को धारण करना चाहिए।" *(विष्णुदयाल निबंधावली, पृ० ३०)*

ज्ञान

ज्ञान भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व है। आस्तिक दर्शनों ने ब्रह्म को ज्ञान का आदिस्रोत कहा है। यही कारण है कि विद्वानों में यह मान्यता प्रचलित रही है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। ज्ञान वह प्रकाश है, जो मानव को अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने का पथ प्रदर्शित करता है।

पंडित विष्णुदयाल अपने निबंध 'संसार वृक्ष' में 'ज्ञान' के बारे में इस प्रकार प्रकाश डालते हैं – "वेद ज्ञान ईश्वर-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। वेद ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। जब सीता की खोज में हनुमान जी निकलने वाले थे, वे एक मुद्रिका साथ लेकर निकले थे। मुद्रिका के होने से अशोक वाटिका में पड़ी सीता पहचान सकी कि ये राम के दूत है। हम सीता के समान अशोक वाटिका में पड़े

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

वेद मास

श्री सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा

ऋषि बोध एवं दयानंद जन्म दिवस के बीच मोरिशस आर्य सभा ने दयानन्द मास घोषित किया था और जून के महीने को सत्यार्थप्रकाश मास क्यों उसी महीने में स्वामी जी ने अपने महान् ग्रन्थ का प्रणयन किया था और जुलाई के महीने को वेद मास के नाम से अभिहित किया क्योंकि इसी महीने में याने श्रावण के महीने में हमारे ऋषि मुनियों ने वेदों के पठन-पाठन का आयोजन किया था सदियों पहिले।

बीस जुलाई से लेकर १९ अगस्त तक वेद मास के अन्तर्गत देश भर में वेदों का प्रचार-प्रसार किया गया। आर्यसभा के सभी पुरोहितों ने सभी आर्य मंदिरों में वेद के मंत्रों द्वारा आहुतियाँ डालीं। मोरिशस का वातावरण महक उठा सुगन्धित, मिष्ट गुणयुक्त, पुष्टिकारकगुणायुक्त, तथारोगनाशक गुणयुक्त द्रव्यों से ।

अग्नि द्वारा सूक्ष्म होकर वह वायु और वर्षा के जल की शुद्धि करने वाला होता है। ऐसे शोधन करने से अन्न और शाक-सब्ज़ी भी रोग रहित और शरीर को पुष्ट बनाती है। इससे सुख मिलता है और दुख दूर होता है। इसलिए यज्ञ, हवन व अग्निहोत्र को श्रेष्ठतम कर्म माना जाता है। इसके अलावा वेद मंत्रों के पठन-पाठन से वेदों की रक्षा होती है। ऐसा करने से ऋषि ऋण से हम बरी होते हैं। यदि सृष्टि के आरम्भ में जब परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियों द्वारा वेद-ज्ञान प्रदान किया और न जाने कितनी सदियों तक हमारे ऋषियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी वेद मंत्रों को सुनाकर क़ायम रखा।

सावन का मास तो समाप्त हो जाता है पर हमारे लोग यज्ञ करना बन्द नहीं करते। अब सावन महोत्सव न बोलकर चौमासा यज्ञ करना आरम्भ कर देते हैं। यज्ञ तो परोपकार करने के लिए करते हैं। इसमें स्वार्थभाव किंचित नहीं होता।

इसके अलावा यज्ञ जहाँ कहीं भी श्रावणी महोत्सव मनाने का आयोजन हुआ कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। आप शायद पूछेंगे कि क्यों हम हिन्दू समुदाय के लोग खासकर आर्यसमाजी यज्ञ को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। उत्तर में हम ये कहेंगे कि वैदिक संस्कृति के प्राण है यज्ञ। जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। हमने श्रावणी मास के अन्तर्गत सभी लोगों को स्मरण दिलाया कि यज्ञ के अनेक नाम है जैसे – अग्निहोत्र, अग्न्याधान, देवयज्ञ हवन वा होमादि। लेकिन सबसे बड़ा यज्ञ तो सृष्टि के आरम्भ में ही हो गया था और आज पर्यन्त हो रहा है। यह सम्पूर्ण दृष्टि जो है यह यज्ञ है।

हमारी उपनिषदों में यज्ञ, अध्ययन और दान इन तीनों को धर्म के स्तम्भ कहा गया है। इन तीनों में सबसे पहला और सबसे मज़बूत स्तम्भ यज्ञ ही है उपनिषद् काल में यज्ञ दैनन्दिनी का अभिन्न अंग था अतः वेद में प्रार्थना है कि –

मा प्रणाय पथो वयं, मा यज्ञदिन्द्रसोमिनः।
माऽन्तस्थुर्नोऽरातयः ।।

हर साल श्रावण महोत्सव आता है और दो चार बातों को याद दिलाता है जिनमें अपने ऊपर जो तीन ऋण है उससे उऋण होने को याद दिलाता है। वे ऋण हैं – पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण। हमें इन तीनों के प्रति बहुत कृतज्ञ होना चाहिए। कृतज्ञता प्रकट करने से हमें सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

अब अन्त में हम श्रावणी उपाकर्म और उत्सर्जन पर प्रकाश डालकर कार्यक्रम को विश्राम देना चाहेंगे।

महर्षि दयानन्द की देन

आचार्य विरजानन्द उमा

जिस समय महर्षि दयानन्द भारत के रंग मंच पर आये, उस समय इस देश की ऐसी दुरावस्था थी : धर्म का ह्रास और अधर्म की वृद्धि ।

धर्म का स्थान कुरीतियों ने ले लिया था। ऋषि परम्परा समाप्त हो चुकी थी। चारों ओर दंभी और अत्याचारियों का बोलबाला था। कहा भी है कि –

जिधर भी जाता हूँ, वीरान नज़र आता है
भ्रम में डूबे हर इंसान नज़र आता है
कैसा है ये दिन के उजाले में
इंसान को नहीं, इंसान नज़र आता है।

वेद के स्थान में भ्रष्ट ग्रंथों का सर्वत्र प्रचार ज़ोरों पर था। वैदिक धर्म एक पुरानी जीर्णशीर्ण खँडहर के अपने अज्ञात उद्धारक की प्रतीक्षा में आँसू बहा रहा था। ऐसे ही समय में पश्चिमी भारत में एक महान् तेज़ का प्रादुर्भाव हुआ। उस तेज़ से जिस प्रकार प्रचण्ड सूर्य अपनी प्रखर रश्मियों से अंधकार को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है, उसी प्रकार समस्त मत-मतांतर-रूपी अज्ञानान्धकार को दूर करके सर्वत्र वेद ज्ञान ने अपने प्रचण्ड ज्योति से आलोक प्रदान किया।

आज पुनः वह समय आ गया है जहाँ हमें महर्षि दयानन्द की देन पर विचार करना है। महर्षि जी ने मानव जीवन के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला और उनका निराकरण अपने ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, व्यवहार भानु आदि में कर दिया है।

प्रत्येक महापुरुष संसार को कुछ न कुछ महत्वपूर्ण देन देता है। इस रूप में संसार उनका सदा ऋणी रहता है। जिस समय समाज को जिस तत्व की आवश्यकता होती है महापुरुष उसी के अनुसार समाज में क्रांति लाता है। उस क्रांति से समाज का पुनः निर्माण होता है। उनके प्रत्येक क्रिया कलापों से संसार कुछ न कुछ ग्रहण करता ही रहता है। उनका जीवन लोकोत्तर होता है। जब संपूर्ण जगत् सोता है तब ऋषि जागता है, फिर संसार को जागता है। वह सच्चे अर्थों में राष्ट्र, जाति, समाज तथा मानवता का प्रहरी होता है। महान् पुरुष परिस्थिति को अपनी दासी बना देते हैं। परिस्थितियाँ ही उनका अनुगमन करने लग जाती हैं। वे समाज को कर्म में प्रवृत्त कराने के लिए ही कर्म करते हैं।

गीता में कहा गया है –

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तत्ते ।।

जीवन काल में तो महापुरुष सत्तप्रयत्न तथा सदुपदेशों द्वारा महान् उपकार करते ही हैं, अनन्त की ओर चले जाने पर भी वे समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण जगत् को सतत आलोक एवं प्रकाश प्रदान करते रहते हैं। **क्रमशः**

पृष्ठ २ का शेष भाग

रहेंगे जब तक कि मुद्रिका के दर्शन न हों। मुद्रिका वेद है, वेद के रचयिता ईश्वर का ज्ञान मिलता है। वेद शब्द का अर्थ है 'ज्ञान'।" *(विष्णुदयाल निबंधावली, पृ० ३०)*

वे अपने एक दूसरे निबंध – 'शरीर क्षेत्र है, जंगल नहीं' में लिखते हैं – "गीता ज्ञान को सरल बनाकर कहती है कि मनुष्य की देह खेत है। खेत में मिट्टी है। मनुष्य का शरीर तो मिट्टी से ही बना है। मिट्टी और पानी को मिलाया जाय, तो पिण्ड मिलेंगे, जो मांस का स्मरण कराते हैं। खेत में पत्थर है तो शरीर में हड्डी पायी जाती है। खेत में नदी, सरोवर है, तो शरीर में खून विद्यमान है। भेद यही है कि शरीर का जल रंगीन है, लाल रंग का है ।" *(विष्णुदयाल निबंधावली, पृ० २१-२२)*

मनुष्य कर्मशील प्राणी है। वह सुकर्म और कुकर्म, दोनों कर डालता है। जिस तरह एक अन्धा आदमी अज्ञानवश गरम लोहे को पकड़ लेता है, वैसे ही एक अज्ञानी सत्कर्म के बदले दुष्कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। अज्ञान अंधकार है, जो बुद्धि को पथ-भ्रष्ट कर देता है।

पुनर्जन्म

पुनर्जन्म का सरल अर्थ है – फिर से जन्म लेना । पुनर्जन्म का विचार संसार को वैदिक दर्शन की देन है। हमारे ऋषि-मुनियों के चिरकाल के चिंतन-मनन के फलस्वरूप इस अनोखे ज्ञान का प्रकाश विश्व में फैला है। यह प्रश्न अक्सर उठता है कि आत्मा शरीर त्यागने पर कहाँ जाती है? महर्षि दयानन्द *(सत्यार्थ-प्रकाश, नवम् समुल्लास)* ने इसका उत्तर निम्न प्रकार दिया है – "जब आत्मा शरीर छोड़ता है, तो वह 'यमेन वायुना' अर्थात् यमालय में जाता है पश्चात् परमेश्वर उस जीव के पाप-पुण्यानुसार जन्म देता है। वह वायु, जल, अन्न अथवा शरीर के छिद्र द्वारा दूसरे के शरीर में ईश्वर की प्रेरणा से ही प्रविष्ट होता है। इसमें मनुष्य का जीव पशु आदि में और पशु का मनुष्य के शरीर में आता-जाता है, क्योंकि जब पाप बढ़ जाता है और पुण्य कम हो जाता है, तब मनुष्य का जीव पशु आदि में अर्थात् नीच शरीर में, और जब धर्म अधिक तथा अधर्म कम होता है तब देव अथवा विद्वानों का शरीर मिलता है। जब पाप-पुण्य बराबर होता है, तब साधारण मनुष्य का जन्म होता है।"

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी पुनर्जन्म के कट्टर समर्थक थे। 'उनकी संस्कृति बनाम हमारी संस्कृति' विषयक निबन्ध में वे लिखते हैं – "नास्तिकता का जब पश्चिम में प्रचार हो रहा है सब कोई धर्म की रक्षा करते वक्त इस परिणाम पर पहुँच रहे हैं कि लोगों को बताना चाहिए कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त युक्तियुक्त है। अपने ग्रन्थ की भूमिका में श्री ज्वान मास्कारो ने अनेक बार इस सिद्धान्त का उल्लेख किया है। वे स्वयं ईसाई हैं और मानते हैं कि ईसा के प्रवचन को उपनिषद् नाम से पुकारना चाहिए। वे याद दिलाते हैं कि गीता कहती है कि मैं उपनिषद् हूँ। उपनिषद् में इस सिद्धान्त को न पाया जाता तो इस उपनिषद् के प्रेमी को यह कदापि प्रभावित करने में समर्थ न होता।"

पुनर्जन्म का विचार बचवैया है, इसलिए इस पर बार-बार प्रकाश डालना अनुचित न होगा संत विनोबा ने इसके बारे में अभी हाल ही में कहा है – "मेरे लिए यह जन्म जितना सिद्ध है, उतना ही पहले का और आगे का भी सिद्ध है। इस विषय में मेरा पक्का मानना है कि इस सृष्टि में कहीं भी देखेंगे, तो यहाँ उसका अन्त है और यहाँ आदि, ऐसा नहीं कह सकते । वह अनादि अनंत है और वह सृष्टि का स्वरूप ही है । अभी आसमान में कितने तारे हैं इसकी गिनती हो रही है और रेडियो अस्ट्रोनोमी बता रही है कि वहाँ से यहाँ लाइट पहुँचने में दस लाख वर्ष लगते हैं। इसकी अंतिम हद कहाँ है, हम नहीं कह सकते। दुनिया की सीमा कहाँ तक है, उसकी सीमा के बाद क्या है, सोलिड है, लिक्विड है, गैस है या स्पेस है, कुछ कह नहीं सकते। लेकिन स्पेस हो तो भी अस्तित्व है। यानी दुनिया वहाँ समाप्त नहीं है। इसलिए सृष्टि को अनादि अनंत कहा है ।" *(विष्णुदयाल निबंधावली, पृ० ८५-८६)*

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि पंडित वासुदेव विष्णुदयाल हमारे देश के एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे। उन्होंने भारतीय दर्शन की अनेक विशेषताओं पर अपने निबंधों में प्रकाश डाला है।

---

cont. from pg 1

Les 10 prānas et leurs fonctions dans notre corps sont :

- ***Prāna*** - sert à l'inhalation ou à faire pénétrer l'air dans le poumon
- ***Apāna*** - sert à (a) expirer ou rejeter l'air se trouvant dans le poumon, et (b) l'excrétion où le corps se débarrasse de ses déchets tels que l'urine, la matière fécale, la transpiration etc.
- ***Samāna*** - sert à avaler la nourriture, à l'entrainer dans l'estomac, à assurer la digestion et la distribution des éléments essentiels dans les différentes parties du corps pour le bon fonctionnement de nos deux yeux, deux oreilles, deux narines et notre bouche.
- ***Vyāna*** - est responsable de la purification et la circulation du sang dans notre corps.
- ***Udāna*** - est la force vitale qui encrypte / enregistre les karmas (les actions qu'elles soient bonnes, médiocres ou mauvaises) de l'individu.

A la mort, c'est à la lumière de ses karmas que le Seigneur, qui est le juge suprême, guide l'âme vers sa prochaine naissance dans la classe de créature (humaine, animale ou végétale) selon ses mérites.

- ***Nāga*** - aide à soulager l'estomac de gaz qui l'encombre en nous faisant roter.
- ***Kurma*** - permet de cligner les yeux (ouvrir et fermer)
- ***Krikal*** - provoque l'éternuement pour dégager les narines des obstructions ou des irritations.
- ***Devadatta*** - transmet le signal de la fatigue en nous faisant bailler. Il nous transmet aussi d'autres signes tels que la faim et la soif.
- ***Dhananjaya*** - prend soin de notre ossature (ensemble des os du corps) et peut faire grossir d'avantage le corps d'un défunt.

Cependant il y a un fait que l'on ne doit pas oublier. Au moment de la mort d'une personne, le corps subtil (*suksham shareera*) et son ensemble (les 10 *prānas*) délaissent le corps physique, afin de permettre à l'âme de récupérer toutes ses forces vitales ou tout son potentiel pour aller vers l'au-delà …la prochaine naissance.

Les 12 Ādityas sont les douze mois de l'année c'est-à-dire, le temps. Rien n'est permanent au monde. Le temps est merveilleux et très puissant. Dans le sens figuré on peut dire qu'il avale (fait disparaître) tout sur son passage dans ce monde et l'univers. Il entraine dans son sillage toute la création, menant tous les êtres vivants et toutes les choses inévitablement vers le vieillissement, la détérioration, la décadence, la ruine et finalement vers la mort ou la disparition.

Indra est l'orage, l'éclair, la foudre ou l'électricité parce qu'il génère beaucoup de force, de puissance ou d'énergie.

Yajna, aussi appelé 'Prajāpati', bénéficie toute l'humanité par la purification de l'air, de l'eau de pluie et la végétation.

Bibliographie : (i) Prashna Upanishad – Question 3 ; Satyārtha Prakāsh Chapitre 7

N. Ghoorah

Shrāvani

Svādhyāya : moyen pour se parfaire

Svādhyāya signifie l'étude entrepris par soi-même. Les quatre étapes de l'apprentissage, obligatoire pour atteindre le succès à 100% quelque soit le sujet, sont: (i) *Shravana* : acquérir des connaissances par les cinq sens de perception, surtout l'écoute et la lecture ; (ii) *Manana*: réfléchir / méditer sur les connaissances acquises ; (iii) *Nididyāsana* : examiner le pour et le contre afin d'arriver à la conclusion si on doit les retenir ; et (iv) *Shākshātkar* : réaliser le sujet ou passer à l'application de ces connaissances.

Le *svādhyāya* nécessite la tranquillisation de notre esprit et nos émotions et s'appliquer à fond dans le sujet spécifique (*Yogashcittavrittinirodhah* Y.D. 1.2.)

La récitation consolide la mémorisation. Shrāvani nous rappelle le besoin de s'appliquer dans la pratique de *svādhyāya* - l'étude des Védas (l'unique révélation de Dieu) et autre écritures (enseignement des rishis ou sages). Ces textes constituent un immense réservoir de connaissances sur le but de la vie et la façon de faire pour y arriver.

Svādhyāya est la boussole qui nous rappelle la bonne direction sur la voie du progrès matériel, moral, spirituel, social, national et universel. Pour être à la mode autour de la chose dite 'séculaire', nous avons récusé l'enseignement ancestral qui nous servait de repères dans la vie. Et drôlement des institutions de renom internationales ont repris ce système d'éducation et l'ont baptisé '*ethics*' bonne gouvernance comme module obligatoire dans leur cursus. Elles visent donc le développement de l'intelligence au niveau de '*medhā buddhi*' où nous reconnaitront le vrai et le faux …la vertu et l'immoralité. Ainsi nous éviterons les faux-pas, ….notre sens de responsabilité nous collera comme notre peau.

Svādhyāya dans les écritures

L'humain, comparé à d'autres espèces de vie, a un immense potentiel pour augmenter ses connaissances en se consacrant à l'étude.

Le Yoga Darshan

Svādhyāya est un des énoncés de *yama-niyama* (discipline) parmi les 8 étapes de l'*Ashtānga Yoga* (2.32)

Tapah-svādhyāya-ishvara-pranidhānāni-kriyāyoga || (2.1). Le *Kriyāyoga* est l'ensemble de :

(i) *Tapah* ou l'ascèse, la restriction, la pénitence ;

(ii) *Svādhyāya* ou l'étude des écritures (le Véda et autres textes des rishis), la répétion des hymnes (mantras) ainsi que OM (le nom suprême de Dieu) ; et

(iii) *Ishvara-pranidhāna* où l'abandon / la soumission complète à Dieu, soutenue sur le principe de l'omniprésence (présent partout et à tout temps) du Seigneur suprême.

Svādhyāyat-ishta-devatā-samprayoga || (2.44) L'étude des écritures et la répétition fréquente du nom de Dieu 'OM', des hymnes Védiques (*mantra*) mènent à la réalisation de Dieu, l'unique divinité de prédilection et de bienveillance (ishta-devata) à qui on prie avec ferveur.

Le Taittireeya Upanishad

Ritam ca… Satyam ca… svādhyāyapravacanene ca… (1.9.1) Ce verset précise que les études doivent se faire autour de vrais textes, conforme aux règles de la nature qui comprend entre autres les écritures (*ārsha grantha*). On doit se connecter aux études à tout temps …en adhérant à la vérité, au cours de la pénitence ; la persévérance ; le contrôle des sens, de ses pensées et émotions ; du rituel *yajña* / *agnihotra* ; des relations avec les gens de savoir, la famille, les amis, les enfants, les petits-enfants, etc. En conséquence la vérité transcendera nos pensées, paroles et pratiques (*manasā, vācā, karmanā*). Les études constituent le sommet de toute pénitence et / ou persévérance. Les études et l'application des savoirs dans la vie forment la base de l'enseignement (*svādhyāyapravacane ca*).

…Satyam vada | dharmam cara | svadhyāyāyānmā pramadah | (1.11.1) Ce verset du dernier chapitre sur l'éducation affirme que tout en parlant que la vérité et en agissant selon la vertu il ne faut jamais abandonner les études des écritures.

Le Chāndogya Upanishad

Esha ha vai yajño… manasca vākaca vartanee (4.16.1) recommande la pratique de *svādhyāya* en mode silencieuse et vocale.

Le Taittiriya Aranyaka & Shatpatha Brāhmana

Svādhyāyo-adhyetavyah Le *Svādhyāya* est une obligation en tout temps.

Baudhāyana Dharmashāstra

Svādhyāya dans le verset 2.6.11 est la voie vers la réalisation de Dieu aussi appellé Brahma, la plus haute entité de l'univers, l'être suprême et éternel.

Bhagavad Gita

…Svādhyāyastapa ārjavam (16.1)
…Svādhyāyābhyāsanam caiva vangmayam tapa ucyate (17.15)

Les deux mentions référent à l'étude des écritures, l'austérité, la vertu comme moyen à développer entre autres le contrôle des sens, le sang-froid, le dynamisme, le courage, la détermination et la bienveillance; et les paroles d'une telle personne sont toujours honnêtes, aimables et instruisent ceux qui les écoutent.

L'héritage des connaissances Védiques

Le *svādhyāya* a été un outil formidable dans la préservation orale du Véda dans sa forme originale et la transmission de ces connaissances pendant des millénaires. La récitation méticuleuse, reprise dans plusieurs séquences et la prononciation correcte des versets assuraient l'authenticité. Cette tradition orale '*shruti*' a été inscrite en 2008 par l'UNESCO sur la liste du patrimoine culturel immatériel de l'humanité.

Le renforcement des compétences

La régularité dans les études raffermisse la croissance de notre esprit et la sagesse. Nous serons plus appliqués et positifs dans nos actions. Les critiques serviront à identifier et éliminer nos failles et les louanges comme une salade assaisonnée d'une grosse poignée de sel.

Que chacun s'engage dans le 'swādhyāya' pour un bon parcours spirituel et des conditions de vie meilleures ! Que la spiritualité devienne la réalité spirituelle dans notre quotidien !

***Yogi* Bramdeo Mokoonlall**
Darshanāchārya
Arya Sabha Mauritius

Bibliographie :

(i) Sanskāra Vidhi, Satyārtha Prakāsh & Rig-Vedadi-Bhashya-Bhumika by Maharishi Dayānand Saraswati
(ii) Yog Darshana & Yogārtha Prakāsh by Swāmi Satyapati Parivrājak
(iii) Ekādashopnishad by Dr. Satyavrat Siddhāntālankār

पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
(ऋ० ६/५२/५)

हम उदय होते हुए
सूर्य को देखें ।

RAKSHA BANDHAN - BONDS OF LOVE

Sookraj Bissessur,B.A.(Hons)

'Raksha' - signifies protection while 'Bandhan' means bond. Celebrated in all parts of the world, including Mauritius, this festival is about the 'bond of protection' connecting brothers and sisters. Symbolised by a 'Rakhi' – a thread which is tied to the right wrist of the brother, it should be simple, not extravagant. What matters is the love, care and affection expressed during that ritual.

Social Bonding

In times when some brothers do not hesitate to harm their sisters or molest them, the Raksha Bandhan Festival is a reminder of the sacred nature of the relationship between two persons. Raksha Bandhan is not only a-one-day celebration. It is a life-long promise by the brother to the sister to protect her. In return, the sister shows her respect, love and affection to the brother and prays for his well-being.

Sisters offer prayers before tying the Rakhi. In most cases the rakhi ritual takes place after the morning prayers. But, given that Raksha Bandhan is not a public holiday, brothers and sisters have to arrange a mutually convenient time as this is a way of sharing joy with the family.

The sister begins by marking the forehead of the brother with the tilak, a white or red spot on the forehead. She then ties the Rakhi on his right wrist and performs the Arti. Flowers are gently thrown on the brother in guise of blessings, followed by sharing of sweets and gifts.

Raksha Bandhan has also a direct link with the Shravani Mahotsav.

Aryan Women Welfare Association (AWWA) empowering on the ABCs of married life

Premarital Counselling Course Month 2016

The Aryan Women Welfare Association (AWWA) had organized a Premarital Counselling Course (PMC) at the Arya Sabha Port Louis, Mauritius. The counseling session started on the 9 April 2016 and it was held for four consecutive Saturdays from 9 a.m. to 2 p.m.After the Re-launching ceremony of the course which was done by Hon. Xavier Duval, the then Acting Prime Minister, at the FSC Goodlands on the 28 February 2016, which I had attended I looked forward to follow the Course. As a young woman, ending my University studies and looking forward to my future life, I can say with conviction that these counselling sessions were worth every hour especially for us who would tie the knot in the near future. I realised in spite of my academic background (degree level) I was so ignorant of the ABCs of married life but now I can say I know how to manage a marital life in the near future.

We are living in a fast going world whereby our moral and spiritual standards are on the decline. Divorce rate is skyrocketing and the main reason for separation is lack of mutual understanding between couples. The sessions were interactive and very lively. At the end of each session, case studies were given to each participant pertaining to the scenarios faced in marital life. We were guided by Psychologists, Marriage Counsellors, Lawyers, social workers and Pandits who took us through relationships between couples, children and in-laws as well as parenting and parenthood aspects. The break up and the legal aspects of marriage as well as the religious aspects of marriage were highlighted.

The aim of the sessions is to prepare future spouses on maintaining love, understanding and marital bliss as everyone wants happiness in his life. The goal is one, but the many facets of life present to us a labyrinth where at times couples lose their way as they walk along and end up lost on the road to happiness. After following the course I am sure, you too will, just like me, be empowered and your partner too, to have a strong, healthy relationship and a better opportunity to live a stable, satisfying and long lasting marriage.

I am pleased to recommend to anyone to attend those sessions as they enlighten our future path. The Arya Sabha Mauritius and AWWA are the torch bearers through such enlightening courses.

I extend my sincere thanks to everyone who volunteered to give us such guidance in this PMC course.

Oupashna Sookhee
MGI student of BA (Hons) Hindi

June 2016

सूचना

पाठकों की सेवा में विदित हो कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के मन्तव्यों से सम्बन्धित विपुल वैदिक साहित्य ऋषि दयानन्द संस्थान के पुस्तकालय, पाई में उपलब्ध है ।

पाठकों से निवेदन है कि वे सोमवार से शनिवार तक प्रातःकाल १०.०० बजे से ३.०० बजे के बीच Rishi Dayanand Institute, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles के 'श्रीमती कुलवन्ती झमन पुस्तकालय' से अध्ययनार्थ पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

आर्य सभा मॉरीशस द्वारा संचालित 'ध्रुवानन्द पुस्तकालय' में उपलब्ध वैदिक साहित्य की उत्तमोत्तम् पुस्तकें एवं हाल ही में दर्शन योग महाविद्यालय से प्राप्त निम्नलिखित पुस्तकें खरीद सकते हैं :–

(१) उत्कृष्ट शंका समाधान - रु ९०.००
(२) सुखी गृहस्थ - रु ६०.००
(३) सफलता का संसार - रु १२०.००
(४) सफलता सुविचार - रु ५५.००
(५) तत्व ज्ञान - रु १५.००
(६) सत्योपदेश भाग एक - रु १५.००
(७) सत्योपदेश भाग दो - रु १५.००
(८) सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार - रु २५.००
(९) अग्निहोत्र पत्रक - रु १५.०० as a set (i)
(१०) वेद पाठ पुस्तिका (ii)

Nirmala Sookar
Rishi Dayanand Institute
M2 Lane, Avenue Michael, Pailles